www.samaylive.com

राष्ट्रीय सहारा

सच कहने की हिम्मत

राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण

दून • वाराणसी से प्रकाशित

लखनऊ । बुधवार • 29 मई • 2013

शहर के लिए वरदान है इक्षु हब : डा. अयप्पन

सरोजनीनगर-लखनऊ (एसएनबी)। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ का इक्षु हब लखनऊ शहरवासियों की सेवा में एक उत्कृष्ट कदम है। यह बात मंगलवार को कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक कार्यशाला के समापन पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के महानिदेशक डा. एस अयप्पन ने कही। डा. अयप्पन ने कहा गन्ने का रस शुद्ध एवं इसके प्राकृतिक स्वाद में सेवन करना शहर में रहने वाले जनमानस के लिए स्वपन जैसा लगता है लेकिन इस स्वपन को हकीकत में बदलते हुए संस्थान ने इस इक्षु हब की स्थापना गर्मी की शुरूआत में की और आज हर दिन संस्थान के सामने गुजरने वाला व्यक्ति कुछ देर के लिए ही सही इस इक्षु हब पर रुककर गन्ना रस का सेवन करना नहीं भूलता। इस इक्षु हब पर रस के अलावा उत्कृष्ट एवं स्वास्थ्यवर्धक गुड़, गन्ने का सिरका, सीरप तथा अन्य पोषक तत्व युक्त उत्पाद उपलब्ध हैं। इस उपलब्धि के लिए डा. एस. अयप्पन ने संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन तथा उनके टीम को बधाई दी। इससे पहले उन्होंने संस्थान परिसर में कृषि विज्ञान केन्द्र के नवनिर्मित भव्य भवन का उद्घाटन किया। उद्घाटन के मौके पर परिषद के उप महानिदेशक (कृषि प्रसार) डा. केडी कोकाटे, संस्थान के निदेशक डा. एस. सोलोमन, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी अनुसंधान के निदेशक डा. एच. रविशंकर, राष्ट्रीय मत्स्य अनुसंधान ब्यूरो के निदेशक डा. जेके जेना भी मौजूद रहे।

अमर उजाला लखनऊ । बुधवार । 29 मई 2013

मशीनों की तिकड़ी आसान करेगी गन्ना खेती

लखनऊ (ब्यूरो)। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित मशीनों की तिकड़ी गन्ना खेती को काफी आसान कर देगी। मंगलवार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. एस. अय्यप्पन ने तीनों मशीनों के शोध एवं विकास प्रारूप (आर.एंड डी. प्रोटोटाइप) का विमोचन किया। संस्थान परिसर में कृषि विज्ञान केंद्र की नवनिर्मित इमारत का उद्घाटन भी डॉ. एस. अय्यप्न ने किया। इस मौके पर डॉ. केडी कोकाटे, उप-महानिदेशक (कृषि प्रसार), भारतीय कृषि अनुसंधान

तीन नई मशीनों के शोध एवं विकास प्रारूप का विमोचन

परिषद नई दिल्ली, डॉ. एस. सोलोमन, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, डॉ. एच. रविशंकर, निदेशक, केंद्रीय उपोष्ण बागवानी अनुसंधान, डॉ. जे.के. जेना, निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य अनुसंधान ब्यूरो मौजूद थे।

गन्ना बुवाई यंत्र : यह मशीन 25 सेमी. गहरी तथा 30 सेमी. चौड़ी नाली बनाकर उसमें दो पंक्तियों में गन्ने की बुवाई करता है। इसकी कीमत करीब 75000 रुपये है।

पौध अवशेष कतरन मशीन : यह गन्ना कटाई के बाद खेत में बची पताई को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट देती है, जिससे उन टुकड़ों का शीघ्र अपघटन हो जाता है। इसकी कीमत करीब 75000 रुपये है।

खूंटी कतरन एवं उर्वरक प्रयोग : इस मशीन को खेत में चलाकर एक साथ खूंटी कटाई के साथ उर्वरकों का प्रयोग हो जाता है। यह मशीन 60000 रुपये में उपलब्ध होगी।

कैनविज टाइम्स
4 बुधवार, 29 मई 2013

गन्ना खेती के लिए तीन नई मशीनों के शोध व विकास प्रारूप का विमोचन

महानिदेशक ने गन्ना अनुसंधान का जायजा लिया

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

लखनऊ। गन्ने का रस व उससे सम्बन्धित उत्पाद प्राप्त करने का इक्षु हब बेहतर विकल्प है। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के इक्षु हब का अवलोकन करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. एस अय्यप्पन ने कहीं।

डॉ. अय्यप्पन ने इस मौके पर कहा कि भीषण गर्मी के मौसम में गन्ने व गन्ने से निर्मित उत्पाद बेहद लाभकारी होते हैं। गन्ने का रस शुद्ध व इसके प्राकृतिक स्वाद में सेवन करना शहर में रहने वाले जनमानस के लिए स्वप्न जैसा है, लेकिन इक्षु हब ने शहरी क्षेत्र की इस कमी को दूर कर दिया है। इस इक्षु हब पर रस के अलावा उत्कृष्ट व स्वास्थ्यवर्धक गुड़, गन्ने का सिरका, सीरप व अन्य पोषक तत्व सम्वर्धित उत्पाद उपलब्ध हैं। इस उपलब्धि के लिए डॉ. एस अय्यप्पन ने संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन व उनकी टीम को बधाई दी। संस्थान की ओर से विकसित तीन उन्नत गन्ना खेती मशीनों के शोध व विकास प्रारूप का विमोचन मंगलवार की सुबह संस्थान परिक्षेत्र में डॉ. एस अय्यप्पन ने किया। इस अवसर पर इन तीनों मशीनों का प्रत्यक्ष प्रदर्शन खेतों में चलाकर किया गया और मशीनों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी महानिदेशक को दी गई। संस्थान परिसर में कृषि विज्ञान केंद्र का नवनिर्मित इमारत का उद्घाटन महानिदेशक ने किया।

❑ संस्थान के इक्षु हब जनसेवा केंद्र को आम जन के लिए लाभकारी बताया

इस मौके पर उप-महानिदेशक (कृषि प्रसार) डॉ. केडी कोकाटे, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ के निदेशक डॉ. एस सोलोमन, डॉ. एच रविशंकर आदि मौजूद थे। इस अवसर पर महानिदेशक ने परिसर में कृषि विज्ञान केंद्रों के द्वारा लगाई गई प्रदर्शनियों को सराहा और उनके द्वारा प्रदर्शित उत्पादों को किसानों तक पहुंचाकर रोजगार पैदा करने की जरूरत पर बल दिया।

उन्होंने एक नए स्लोगन सुखी किसान भारत महान को सभी के समक्ष रखा कृषि विज्ञान केंद्र लखनऊ के कार्यक्रम समंवयक डॉ. आरके सिंह ने केंद्र की गतिविधियों से मुख्य अतिथि को अवगत कराया। केंद्र की ओर से गन्ना खेती में सहफसली खेती से अधिक आय प्राप्त करने के लिए किसानों को दिए जा रहे प्रशिक्षण से अवगत करवाया।

the pioneer
LUCKNOW WEDNESDAY | MAY 29, 2013

ICAR DG visits IISR

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

IISR was extending dedicated service to city denizens by making available fresh sugarcane juice at its Ikshu Hub, said S Ayyappan, director general of ICAR, New Delhi, during his visit to IISR on Tuesday.

Ayyappan visited Ikshu Hub, established by the IISR, which serves fresh cane juice. It was pointed out to the DG that under the present situation, it was an endeavour to provide the city with fresh and clean juice.

The institute is making available juice, chemical free jaggery, vinegar, syrup, jaggery granules and other value-added products of sugarcane juice for general public. IISR scientists pointed out that they had added another feather to their cap of technological development and innovations.

"R & D prototype of three new sugarcane machines, developed by IIISR, Lucknow, was released on Tuesday by Ayyappan. He closely observed the operation of these machines in the sugarcane fields at IISR. He also inaugurated the newly constructed KVK building on IISR premise.

Ayyappan visited the exhibition stalls put up by KVKs and appreciated their efforts in

extending technology to the farmers. He also coined a slogan, "*Sukhi Kisan-Bharat Mahan*". Sugarcane trench planter is being developed by a group of engineers at the institute. This machine plants sugarcane in paired row in deep trenches. It also lays drip irrigation line in sub surface. Senior scientist AK Sah said the machine planted one hectare sugarcane in five hours with the help of four labourers with operational cost of only Rs 2,500, thus saving 60 per cent cost besides manpower.

Another machine developed by IISR is plant residue shredder which does chopping of trashes, stubbles and other residue in small pieces. The chopping of residue in fine pieces facilitates decomposition, thus helping in quick availability of nutrients in residue to the plant system through soil.

लखनऊ
डेली न्यूज
लखनऊ, बुधवार, 29 मई 2013 3

आईआईएसआर ने गन्ने की खेती के लिए बनाया नया यंत्र

पांच घंटे में एक हेक्टेयर खेत की बुआई

डेली न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) ने गन्ने की खेती में बुवाई करने के लिए ऐसा यंत्र बनाया है जो 40 से 50 श्रमिकों के बराबर अकेले काम कर सकेगा। बस इसे चलाने और थोड़ा बहुत सहायता के लिए चार श्रमिकों को इस मशीन के साथ लगना पड़ेगा। इसका नाम 'गहरी नाली में गन्ना बुवाई यंत्र' रखा गया है। इससे बुवाई में आने वाली लागत का 60 प्रतिशत तक का हिस्सा बचाया जा सकता है। यह मशीन पांच घंटे में चार श्रमिकों की सहायता से एक हेक्टेयर खेत की बुवाई कर सकेगी। मशीन की अनुमानित कीमत 75000 रुपए बताई जा रही है। इस मौके पर 'खूंटी कतरन' और उर्वरक प्रयोग मशीन का भी उद्घाटन किया गया। यह मशीन 1500 रुपए प्रति हेक्टेयर के संचालन लागत के साथ एक हेक्टेयर खेत में कार्य 3 से 4 घंटे में संपन्न कर लेता है। इस मशीन की कीमत 75000 रुपए बताई जा रही है। इन मशीनों का उद्घाटन मंगलवार को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

के महानिदेशक डॉ. एस अय्यप्पन ने आईआईएसआर में आयोजित प्रदर्शनी के दौरान किया।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने बताया कि 'गहरी नाली में गन्ना बुवाई यंत्र' 25 सेमी गहरी और 30 सेमी चौड़ी नाली खोलकर उसमें दो पंक्तियों में गन्ने की बुवाई कर सकेगा। साथ ही इन दो गन्ना पंक्तियों के बीच में ड्रिप सिंचाई लाइन 10 सेमी की गहराई पर

- **मशीन की अनुमानित कीमत 75 हजार रुपए**

बिछाएगा। साथ ही यह मशीन सिंचाई जल बचत करने के लिए बुवाई के साथ ड्रिप लाइनों को नाली में बिछाती है। वहीं 'खूंटी कतरन' मशीन गन्ना कटाई के बाद खेत में बचे हुए खूंटी या सूखी पताई को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट देता है। जिससे उन टुकड़ों का सड़न या अपघटन जल्द हो जाता है। और अवशेष में उपलब्ध पोषक तत्व मिट्टी के द्वारा पौधों को उपलब्ध त्वरित हो जाता है। डॉ. साह ने उम्मीद जताई कि यह मशीन बाद में किसानों को निजी क्षेत्र के मशीन निर्माताओं द्वारा 60000 रुपए में उपलब्ध हो सकती है। इस मौके पर सीएसआईआर के निदेशक डॉ. एस सोलोमन, केंद्रीय उपोष्ण बागवानी अनुसंधान के निदेशक डॉ. एच रविशंकर, राष्ट्रीय मत्स्य अनुसंधान ब्यूरो के निदेशक डॉ. जेके जेना के अलावा वैज्ञानिक तथा बड़ी संख्या में कृषक मौजूद रहे।

4 कल्पतरु एक्सप्रेस
www.kalptaruexpress.com
लखनऊ, बुधवार 29 मई 2013

नई तकनीक

गन्ना खेती के लिए तीन नई मशीनों के शोध एवं विकास प्रारूप का विमोचन

गन्ना संस्थान का इक्षु हब जनसेवा में समर्पित: अय्यप्पन

कल्पतरु समाचार सेवा

पीजीआई, लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ का इक्षु हब शहरवासियों की सेवा में एक उत्कृष्ट कदम है। प्राकृतिक रूप में गन्ने के रस का सेवन करना शहरवासियों के लिए स्वप्न से कम नहीं। इस स्वप्न को हकीकत में बदलते हुए संस्थान ने तीन विकसित उन्नत गन्ना खेती मशीनों के शोध एवं विकास के प्रारूप (आरएण्ड डी.प्रोटोटाइप) का विमोचन मंगलवार सुबह किया।

संस्थान परिसर में कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय तीन दिवसीय कार्यशाला के समापन अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान डॉ.एस. अय्यप्पन, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने इसका विमोचन किया। इस अवसर पर इन तीनों मशीनों को खेतों में चलाकर प्रदर्शित किया गया साथ ही मशीनों के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी महानिदेशक को दी गई। उद्घाटन अवसर पर डॉ. केडी कोकाटे, उप-महानिदेशक (कृषि प्रसार), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, डॉ. एस.सोलोमन, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, डा.एच. रविशंकर, निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी अनुसंधान,लखनऊ, डॉ. जेके. जेना, निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य अनुसंधान ब्यूरो, लखनऊ वैज्ञानिक तथा बड़ी संख्या में कृषक मौजूद थे।

इस अवसर पर महानिदेशक महोदय ने परिसर में कृषि विज्ञान केन्द्रों के द्वारा लगाई गई प्रदर्शनियों को सराहा तथा उनके द्वारा प्रदर्शित उत्पादों को किसानों तक पहुंचाकर रोजगार पैदा करने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने इस दौरान एक नये स्लोगन "सुखी किसान भारत महान" को चरितार्थ करने पर बल दिया।

खूंटी कतरन एवं उर्वरक प्रयोग मशीन

जिस खेत में पताई सड़ा दी गई हो उसमें खूंटी काटकर उर्वरक प्रयोग बहुत ही मुश्किल का काम होता है। इस समस्या के समाधान के लिए खूंटी कतरन एवं उर्वरक प्रयोग मशीन का विकास किया गया। इस मशीन का विमोचन भी इस मौके पर डॉ. अय्यप्पन के द्वारा किया गया। इस मशीन को गन्ना खेत में चलाकर एक साथ खूंटी कटाई के साथ उर्वरकों का प्रयोग हो जाता है। जिससे पेड़ी फसल प्रबंधन में एक नई आशा जाग्रत हुई है। यह मशीन तीन हेक्टेयर प्रति घंटा की क्षमता से चलता है तथा एक हेक्टेयर खेत में कार्य संपन्न करने के लिए सिर्फ 1500 रुपये संचालन लागत आती है। यह मशीन बाद में किसानों को निजी क्षेत्र के मशीन निर्माताओं द्वारा 60000 रुपये में उपलब्ध होने की संभावना है। कृषि विज्ञान केन्द्र लखनऊ के कार्यक्रम समन्वयक डॉ.आरके.सिंह ने केन्द्र की गतिविधियों से मुख्य अतिथि को अवगत कराया। केन्द्र द्वारा गन्ना खेती में सहफसली खेती से अधिक आय प्राप्त करने के लिए किसानों को दिये जा रहे प्रशिक्षण विशेष रूप से मुख्य अतिथि के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा। इस दौरान दुधारू पशु के लिए चॉकलेट के रूप में पोषक तत्वों से केन्द्र द्वारा बनाया गया। लगभग दो से तीन किलो का ब्रिक काफी सराहनीय रहा तथा इसके सेवन से पशु दूध उत्पादन में वृद्धि होती है।

क्या है इक्षु हब

गन्ना अनुसंधान केंद्रों पर गन्ना उत्पादों के प्रचार-प्रसार के लिए लगाए जाने वाले वृहद स्टॉल है। यहां गन्ना से संबंधित सारे उत्पाद एक ही जगह लोगों को मुहैया कराए जाते हैं, साथ ही गन्ना की खेती से जुड़ी बारीकियों से लोगों को परिचित करवाया जाता है। प्राकृतिक परिवेश में लगाए जाने वाले ऐसे स्टॉल लोगों के बीच आकर्षण का केंद्र बने हैं।

गन्ना बुआई यंत्र

पहली विमोचित मशीन गहरी नाली में गन्ना बुवाई यंत्र का प्रारूप संस्थान के वैज्ञानिकों ने कड़ी मेहनत के बाद विकसित की है। यह मशीन 25 सेमी. गहरी तथा 30 सेमी. चौड़ी नाली खोलकर उसके दो पंक्तियों में गन्ने की बुवाई करता है।

साथ ही इन दो गन्ना पंक्तियों के बीच में ड्रिप सिंचाई लाइन 10 सेमी. की गहराई पर बिछाता है, जो कि इस मशीन की विशेष खासियत है। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.एके साह के अनुसार यह मशीन पांच घंटे में चार श्रमिकों की सहायता से एक हेक्टेयर खेत की बुवाई करता है, जिसका संचालन लागत लगभग 2500 रुपये है।

इस प्रकार गन्ना बुवाई में लगने वाले कुल लागत में लगभग 60 प्रतिशत तक की बचत होती है तथा बुवाई में लगने वाले 40 से 50 श्रमिकों की जगह सिर्फ 4 श्रमिकों की आवश्यकता होती है। इस मशीन की अनुमानित कीमत 75000 रूपये है।

पौध अवशेष कतरन मशीन

एक अन्य मशीन जिसका प्रारूप आज विमोचित किया गया वह है पौध अवशेष कतरन मशीन। काफी लंबे समय से किसानों की यह मांग थी कि कोई ऐसी मशीन बने जो पौध अवशेष एवं गन्ने की सूखी पताई को खेतों में छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर वहीं छोड़ दे। इस मांग को ध्यान में रखते हुए इस मशीन का विकास किया गया। यह मशीन 1500 रुपये प्रति हेक्टेयर के संचालन लागत के साथ एक हेक्टेयर खेत में कार्य तीन से चार घंटे में संपन्न कर लेता है तथा इस मशीन का संभावित कीमत 75000 रुपया है।

जनसंदेश टाइम्स
लखनऊ, बुधवार, 29 मई, 2013

'इक्षु हब जनसेवा में समर्पित'

लखनऊ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के महानिदेशक डॉ. एस अयप्पन ने कहा कि भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान की ओर से इक्षु हब शहरवासियों की सेवा में समर्पित किया

शुरुआत

गन्ना खेती के लिए तीन नई मशीनों के शोध एवं विकास प्रारूप का विमोचन

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में नवनिर्मित कृषि विज्ञान केन्द्र का उदघाटन करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक डॉ. एस अयप्पन

जाना वाकई ही एक बढ़िया कदम है।

डॉ. अयप्पन ने कहा कि इक्षु हब गन्ने का रस शुद्ध एवं इसके प्राकृतिक स्वाद में सेवन करना शहर में रहने वाले जनमानस के लिए स्वप्न जैसा लगता है, लेकिन इस स्वप्न को हकीकत में बदलते हुए संस्थान ने इस इक्षु हब की स्थापना गर्मी के शुरूआत में की। यही वजह है कि अब हर दिन संस्थान के सामने गुजरने वाला हर व्यक्ति कुछ देर के लिए ही सही इस इक्षु हब पर रुककर गन्ना रस का सेवन करना नहीं भूलता। उन्होंने संस्थान द्वारा विकसित तीन उन्नत गन्ना खेती मशीनों के शोध एवं विकास प्रारूप का विमोचन किया। साथ ही परिसर में कृषि विज्ञान केन्द्र की नवनिर्मित इमारत का भी उद्घाटन किया। कृषि विज्ञान केन्द्र के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. आर के सिंह ने कहा कि केन्द्र द्वारा गन्ना खेती में सहफसली खेती से अधिक आय प्राप्त करने के लिए किसानों को दिये जा रहे प्रशिक्षण विशेष रूप से आकर्षण का केन्द्र रहा। **वसं.**